ROOTINDEXING
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in January 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

ममता कालिया के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अनुशीलन

पृथ्वी राज, अनुसन्धान विद्वान्, हिंदी विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्विधलय, चूरू रोड, झुंझनू, राजस्थान।
डॉ कुलदीप गोपाल शर्मा, सह-आचार्या, हिंदी विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्विधलय, चूरू रोड, झुंझनू, राजस्थान।

शोध आलेख सारांश –

व्यक्ति समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई है। इसके बिना समाज एवं सामाजिक अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। व्यक्ति है, तो समाज का होना संभव है। दोनों के बीच एक गहरा अन्योन्याश्रित संबंध है। जैसे कि एक ही सिक्के के दो पहलू। इन दोनों के बीच का पारस्परिक संबंध अन्य सामाजिक इकाईयों को भी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। समाज में घटित घटनाएँ ही कमोबेश साहित्य में वर्णित हैं। कभी यथार्थ कभी कल्पना के माध्यम से। अतः हमें समाज का जीवंत चित्र साहित्य में उल्लिखित सत्य के माध्यम से पता चलता है। साहित्य व्यक्ति अथवा समाज विरोधी नहीं होता है बल्कि ऐतिहासिक क्रम में विकासगत विविध आयामों में क्रमशः हमें उत्थान, पतन, विकास सभी कुछ साहित्य के माध्यम से ही ज्ञात होता है। एक साहित्यकार सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक सत्य से प्रथमतः स्वयं रु–ब–रु होता है एवं तदुपरांत उसे समाज के सामने अपने सर्जनात्मक कौशल के साथ साझा करता है। सामाजिक बोध का उद्देष्य रचनाकार, रचना तथा पाठक विषय के त्रिकोण के माध्यम से साहित्यकार की रचनाओं में विद्यमान जीवन को सामाजिक बोध के तत्त्वों के माध्यम से उद्घाटित करता है।

मूल शब्द – सामाजिक बोध, परिवेश, एवं रचना

WIKIPEDIA
The Free Encyclopedia

भूमिका –

प्राचीन काल से ही हमारी सामाजिक व्यवस्था का नियमन कुछ इस प्रकार का है कि व्यक्ति और समाज के बीच सामाजिक व्यवस्था ही एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करती है। बुनियादी तौर पर मनुष्य ने ही समाज की मजबूत नींव रखने का प्रयास किया। साथ ही अपने जीवन को समाजगत एवं व्यवस्थागत नियमों के दायरे में सीमाबद्ध एवं सुव्यवस्थित कर जीने का प्रयास भी किया और आवश्यकतानुसार नीति, सिद्धांत, शास्त्र तथा धर्म–आचरण इत्यादि के विभाजन कर समाज के विविध अंग रूप में भी प्रस्तुत किये। यदि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तो ये सभी नीतियाँ, शर्तें, सिद्धांत, शास्त्र तथा धर्म इत्यादि उसके शरीर के एक–एक अंग हैं। जब व्यक्ति किसी समान प्रवृत्ति के स्तर पर समाज के विविध रूपों अथवा आयामों एवं अपने साथियों के साथ कुछ समान नियमों के घेरे में आबद्ध था तब से ही समाज एक व्यवस्थागत रूप में प्रचलन में आया और वह एक सामाजिक प्राणी कहलाने लगा। जीवन को यथासाध्य सुचारू रूप से व्यतीत करने के लिए संबद्ध प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे पर निर्भर होने लगे।इस समाज के अपने कुछ नीति–नियम बनाये गये, जिनका अनुपालन समूह को येन–क्रेन– प्रकारेण करना ही पड़ता है। यह भी तथ्य है कि बीतते समयानुसार इन नीतियों में पर्याप्त बदलाव भी हुए एवं आगामी भविष्य में होते भी रहेंगे। वर्तमान की आधुनिकतावाद में स्वहित को ही सर्वस्व मानने वाले मनुष्य के अवसरवादी प्रवृत्ति, स्वार्थी नीतियाँ, बेईमानी, भ्रष्टाचार इत्यादि ने संपूर्ण देश में गहरी अव्यवस्था उत्पन्न कर दी है। साहित्य समाज के विविध दिशाओं में हो रहे तात्कालिक अथवा दूरगामी समस्त परिवर्तन को अभिव्यक्त कर दिशा–निर्देश देता है। समाज की सकारात्मक–नकारात्मक परिस्थितियों को उद्घाटित कर एक नया सुंदर सुदृढ़ एवं समस्याविहीन समाज की रचना के लिए इंसान को प्रेरित करता है। साहित्य वास्तव में जीवन परिवेश के दबाव में समाज के बनते–बिगड़ते मानवीय–मूल्यों, रिश्तों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति करता है। आधुनिकता ने इंसान को सोचना, समझना और व्यापार करके समृद्ध होना तो सीखा दिया है किंतु इंसानियत को मानवीय सद्भावनापूर्ण व्यवहार करना नहीं सिखाया। इंसानियत के अभाव में समाज में फ़ैली अराजकता, निराशा, अव्यवस्था, असंतोष, घुटन, क्षोभ, आक्रोश आदि व्याप्त हुए हैं। आज इंसान एक शून्य चौराहे पर खड़ा दिखता है। ऐसी द्वन्द्वात्मकपूर्ण स्थितियों के मध्य खड़े इंसान को सही रास्ता दिखाने का कार्य भी साहित्य करता है। आज के कथाकार अपने रचनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज में प्रभावशाली तरीके से जीना सीखाते हैं। ममता कालिया भी ऐसे ही समकालीन कथाकारों में से एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। ममता जी की कहानियां सिर्फ़ कोरे जादुई गल्प का चित्रण नहीं करती हैं, बल्कि हमारे सामाजिक जीवन के कटु–प्रसंगों का दस्तावेज़ है। उन्होंने समाज में रहकर जो कुछ देखा और अनुभव किया उसे कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उनकी कहानियां अपने आस–पास के परिवेश के रचनात्मक यथार्थवादी चेतना को प्रकट करती है। उनकी इसी रचनात्मक क्षमता के कारण उनकी कहानियों में लगातार समाज के बदलते हुए स्वरुप का प्रतिबिंबित रूप देखने को मिलता है। ममता जी के साहित्य में व्याप्त अविश्वास, रूढ़िवादिता, बेरोज़गारी, घुटन, भ्रष्टाचार एवं राजनीति आदि को मुखरित किया गया है। कहानियों के प्रायः सभी व्यक्ति अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ता हुआ टूटता जा रहा दिखाई देता है। परिवार की पहली आधारभूत इकाई होते हुए भी अपने आपको अकेला पाता है। स्वार्थी रिश्तों के कारण परिवार बिखर रहे हैं एवं संबंधों में संवेदना का अभाव दिखाई दिखता है। उनकी कहानियों में महानगरी में रहने वाले व्यक्ति की स्थिति और मानसिकता का चित्रण सम–सामयिक संघर्षशील, सामाजिक संदर्भों के साथ जोड़कर संवेदनशीलता और प्रामाणिकता से हुआ है। ममता जी की कहानियों में यथार्थबोध इतना है कि लोगों को इन कहानियों में अपने ही जीवन की सही तस्वीर साफ़गोई के साथ नजर आती है। ममता जी ने अपने रचनात्मक सर्जन से सम–सामयिक जीवन में व्याप्त संवेदनशीलता, निस्संगता एवं अभावों को प्रदर्शित करके पाठकों के सम्मुख एक प्रश्न चिह्न खड़ा करके उसकी चेतना को व्यापक धरातल पर जागृत करके उसका समाधान ढूंढने के लिए बाध्य कर देता है। हम उनकी सामाजिक कहानियों का समाज–शास्त्रीय दृष्टि से विस्तार से अध्ययन करेंगें। समाज एक बहुत बड़ा अवधारणात्मक शब्द है, जिसमें संसार के सभी जीवित प्राणी समाहित होते हैं पर मुख्य रूप से यह सामाजिक जीवन पर आधारित है। समाज–शास्त्र समाज का विज्ञान है, जो विस्तृत रूप से आज के सामाजिक जीवन के लिए अध्ययन करता है। समाज को वैज्ञानिक और ऐतिहासिक ढंग से अध्ययन करके अन्य विज्ञानों की भांति अपनी एक सैद्धांतिक प्रणाली की स्थापना करता है। समाज–शास्त्रीय अध्ययन के अंतर्गत समाज का एक संपूर्ण चित्रण चित्रित किया जाता है। समाज–शास्त्रीय अध्ययन सामाजिक जीवन का वैज्ञानिक, वस्तुपरक तथा उससे संबंधित तत्वों का अध्ययन करता है। साहित्य समाज का दर्पण है और समाज साहित्य के माध्यम से उसका स्वरुप संस्कृति, रीति, धर्म, भाषा आदि समझता

Scientific Indexing Services

है। अतः साहित्य और समाज में गहरा संबंध है एवं सामाजिक बोध अध्ययन का विषय है। साहित्य व समाज के परस्पर संबंध को लेकर समाज में घटित और इससे संबंधित तत्वों की खोज करता है। वह सामाजिक–सांस्कृतिक घटनाओं, प्रारूपों तथा नाना प्रकार के बाह्य एवं अंतः संबंधों का अध्ययन करता है। इस प्रकार समाज के भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति साहित्य करता है।सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत सामाजिक जीवन के छोटे–छोटे हिस्से उत्पन्न होते हैं।

डॉ नगेंद्र ने संक्षिप्त में अपनी परिभाषा दी है– कर्ता कृति और पाठक के त्रिकोण रूप साहित्य के सामाजिक परिवेश का विश्लेषण और संश्लेषण ही साहित्य का सामाजिक अध्ययन है।

हर्बट स्पेंसर ने –परिवार, धर्म, सामाजिक नियंत्रण तथा उद्योग अथवा कार्य को ही समाज–शास्त्र की विषय–वस्तु नहीं बताया अपितु समितियों, समुदायों, श्रम–विभाजन, सामाजिक विभिन्निकरण तथा सामाजिक स्तरीकरण ज्ञान के समाजशास्त्र, विज्ञान के समाजशास्त्र और कला के समाज–शास्त्रीय विश्लेषण को सामाजिक बोध की विषय–वस्तु में सम्मिलित किया है।

इन्होंने भी संपूर्ण समाज को एक इकाई मानकर व्यापक पैमाने पर इसके अध्ययन पर बल दिया है। इस कथन में समाज को एक इकाई मानकर व्यापक रूप से सामाजिक बोध के स्तर पर अध्ययन करने पर बल दिया गया है। सामाजिक बोध के अध्ययन का स्वरुप बड़ा व्यापक विषय है। समाज सामाजिक संबंधों की मकड़जाल है। परिवार, समाज का सबसे छोटा घटक है। परिवारों के संगठन से एक समुदाय, समुदायों के संगठन से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व आदि अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के सामाजिक संबंधों का गहन अध्ययन एक समाजशास्त्री का विषय है। समाज में रहन–सहन, भाषा, धर्म, नीति, अर्थनीति, राजनीति, गाँव, नगर, कला, संस्कृति, विविध समुदाय, श्रेणी, वर्ग, समिति, परिवार, रिश्तेदार, समाज में व्याप्त दहेज–प्रथा, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास और पड़ोसियों के आपसी संबंध आदि का वैज्ञानिक अध्ययन करना ही सामाजिक बोध का अध्ययन स्वरुप है। ममता कालिया न केवल शब्दों की अद्भुत कलाकारी जानती हैं, बल्कि उनका भाषिक ज्ञान भी अत्यंत समृद्ध है। वे साधारण से साधारण शब्दों का प्रयोग करके भी उसके अलग–अलग भावार्थ प्रकट कर देती है। विषय अथवा प्रसंग के अनुरूप शब्दों की भावाभिव्यक्ति उनकी विशेषता है। अपने व्यंग्य की सटीकता और भाषा की सजीवता से उनके कथ्य में एक अलग ही प्रकार का भाव उत्पन्न हो जाता है। यही अभिव्यक्ति की सरलता एवं सुबोधता विषय–वस्तु को मर्मस्पर्शी बना देती है।

बीसवीं सदी के सातवें दशक के आस–पास जब ममता कालिया ने अपना लेखन कार्य आरंभ किया तब तक अन्य समकालीन कथाकारों के रचना कार्य में स्त्री की छवि कोमल, मासूम और घर की परिधि में बंधी हुई दिखाई देती है। लगभग सभी प्रकार की पत्र–पत्रिकाओं ने नारी की यथा स्थिति बनाये रखने का समर्थन करने वाले साहित्य का ही लेखन, पठन, पाठन हो रहा था। इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक दमित, पीड़ित महिला के उत्थान के लिए बहु आयामी व्यक्तित्व से परिपूर्ण ममता कालिया ने पुरजोर साहस के साथ अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम अपने रचनाओं को बनाया। अपने समकालीन यथार्थवादी साहित्यकारों में एक विशिष्ट पहचान बना चुकी ममता कालिया के रचना कार्य में उनकी मौलिक प्रतिभा का परिचय सहज ही सर्वत्र मिल जाता है। ममता कालिया ने साहित्य की अनेक विधाओं में अपना लेखन कार्य किया। उपन्यास, कहानी, एकांकी, निबंध, कविता आदि इन सबमें उन्होंने समाज के लगभग सभी पहलूओं को न केवल छुआ, बल्कि विषय–वस्तु की गहराई में उतर कर पाठक के जनमानस तक अपना भाव भी पहुंचाया। उनके साहित्य में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं और उनके समर्थ समाधान से लेकर दाम्पत्य जीवन में औरतों के संघर्ष को गहराई से चित्रित किया गया है। ममता कालिया ने अपने साहित्य में रोजमर्रा के संघर्ष में एक तरह से युद्धरत स्त्री के आंतरिक व्यक्तित्व को न केवल उभारा, अपितु तुलनात्मक रूप से स्त्री को पुरुषवादी समाज से श्रेष्ठ सिद्ध करने का कार्य भी किया। विषय–वस्तु का नवीन दृष्टिकोण, बदलने का साहस और सामाजिक विसंगतियों पर कड़ा प्रहार ममता कालिया के साहित्य में हर बार पूर्ण रूप से देखने को मिलता है। हिंदी की श्रेष्ठ महिला रचनाकारों में से एक ममता कालिया के लेखन का तेवर उनकी योग्यता को प्रकट करता है। उनका मानना है कि अनेक स्तरों पर जीवन शैली में आधुनिकता को ग्रहण कर लेने वाला समाज स्त्री चिंतन की बदलती धारा और प्रवाह के प्रति उतना तैयार नहीं होता, जितना कि समय की मांग होती है। अतः न केवल 21 वीं सदी बल्कि आने वाले समय में भी ममता कालिया की रचनाएँ प्रासंगिक रहेंगी। उनका साहित्य नारी के अंतस की पीड़ा को जनमानस तक घूंट–घूंट पहुंचाता रहेगा।

ममता कालिया का जन्म 2 नवम्बर, 1940 में मथुरा, वृंदावन के कैनेडियन मिषन अस्पताल में हुआ। उनकी माता श्रीमती इन्दुमती एक गृहिणी तथा उनके पिता श्री विद्याभूषण अग्रवाल पहले शम्भूदयाल कॉलेज, गाजियाबाद के प्राचार्य और बाद मे मुम्बई आकाषवाणी में कार्यरत रहे। वे अंग्रेजी और हिन्दी साहित्य के विद्वान एवं लेखक भी थे। ममता जी पर उनके पिता के बेबाक व्यक्तित्व का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

ममता कालिया पाँच दशकों से हिन्दी साहित्य का कोश बढ़ाती आई हैं, कई पुरस्कारों से अलंकृत हुई हैं,परन्तु अभी तक उनके लेखन पर अन्य रचनाकारों जितना व्यापक काम नहीं हुआ। ममता कालिया 'नारी–वादी' न होते हुए भी आधुनिक भारत में स्त्री की स्थिति पर नई रोशनी डालनेवाली लेखिका रही हैं, उनका साहित्य रूढ़ियों–नुस्खों से मुक्त, साहित्य के मानदण्डों पर खरा उतरता और साथ ही साथ आन्दोलन–बद्ध न होनेपर भी महत्त्वपूर्ण और बहुआयामी प्रश्न उठाता हुआ लेखन लोकप्रिय और पाठकों के लिए सदा रुचिकर सिद्ध हुआ है।

हमारी सामाजिक व्यवस्था का नियमन इस प्रकार किया जा सकता है कि व्यक्ति और समाज के बीच सामाजिक व्यवस्था कड़ी का काम करती है। मनुष्य ने ही समाज की नींव डाली है और अपने जीवन को सुव्यवस्थित ढंग से व्यतीत करने के लिए इसने नीति, सिद्धान्त, शास्त्र तथा धर्म बनाए हैं। मनुष्य अगर समाज का प्राण है तो सभी नीतियाँ उसके शरीर के एक–एक अंग है। जब व्यक्ति समान प्रवृत्ति, समाज स्तर के अपने साथियों के साथ कुछ समान नियमों के घेरे में लगा था, तब से ही समाज का प्रचलन हुआ और यह सामाजिक प्राणी कहलाने लगा। जीवन को सुचारू रूप से व्यतीत करने के लिए व्यक्ति एक–दूसरे पर निर्भर होने लगे। इस समाज के अपने कुछ नीति–नियम बने, जिनका पालन समूह को करना पड़ता था, लेकिन बीतते समय के साथ नीतियाँ बदलती रही। आज स्वहित को ही सर्वस्व मानने वाले मनुष्य के अवसरवादिता, स्वार्थ, बेईमानी, भ्रष्टाचार आदि ने देष में गहरी अव्यवस्था उत्पन्न कर दी है।

ROOTINDEXING
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in January 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

साहित्य समाज के हर परिवर्तन को अभिव्यक्त कर दिषा–निर्देष देता है। समाज की सही–गलत स्थितियों को उद्घाटित कर एक नया सुंदर, सुदृढ़ एवं समस्याविहीन समाज की रचना के लिए इंसान को प्रेरित करता है। साहित्य असल में जीवन परिवेष के दबाव में समाज के बनते–बिगड़ते मानव–मूल्यों, रिष्तों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति करता है। आधुनिकता ने इंसान को सोचना, समझना और व्यापार करके समृद्ध होना तो सिखा दिया है लेकिन इंसानियत को व्यवहार करना नहीं सिखाया। इंसानियत के अभाव में समाज में फैली अराजकता, निराषा, अव्यवस्था, असंतोष, घुटन, क्षोभ, आक्रोष आदि व्याप्त हुए हैं। आज इंसान एक शून्य चौराहे पर खड़ा दिखता है। ऐसी द्वंद्वपूर्ण स्थितियों के मध्य खड़े इंसान को सही रास्ता दिखाने का कार्य साहित्य करता है।

आज के कथाकार अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में प्रभावषाली तरीके से जीना सीखाते हैं। ममता कालिया भी ऐसे ही कहानीकारों में से एक है। ममता जी की कहानियाँ सिर्फ गल्प का चित्रण नहीं है बल्कि हमारे सामाजिक जीवन के कटु प्रसंगों का दस्तावेज है। उन्होंने समाज में रहकर जो कुछ देखा और अनुभव किया, उसे कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उनकी कहानियाँ अपने आस–पास की रचनात्मक यथार्थ चेतना को प्रकट करती है। उनकी इसी रचनात्मक क्षमता के कारण उनकी कहानियाँ जीवन से कहीं अधिक करीब है। उनकी कहानियों में लगातार समाज के बदलते स्वरूप का प्रतिबिंब है।

ममता जी को साहित्य में समाज में व्याप्त अविष्वास, रूढ़िबादिता, बेरोजगारी, घुटन, भ्रष्टाचार, राजनीति आदि को मुखरित किया गया है। कहानियों के प्रायः सभी व्यक्ति अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ता हुआ टूटता जा रहा दिखाई देता है। परिवार की इकाई होते हुए भी अपने आपको अकेला पाता है। स्वार्थी रिष्तों के कारण परिवार बिखर रहे हैं और सम्बन्धों में संवेदना का अभाव दिखता है। उनकी कहानियों में महानगरों में रहने वाले व्यक्ति की स्थिति और मानसिकता का चित्रणसमसामयिक संघर्षषील सामाजिक संदर्भों के साथ जोड़कर संवेदनषीलता और प्रामाणिकता से हुआ है। ममता जी की कहानियों में यथार्थबोध इतना है कि लोगों को इन कहानियों में अपने ही जीवन की सही तस्वीर नजर आती है। ममता जी ने समसामायिक जीवन में व्याप्त संवदेनषीलता, निस्संगता एवं अभावों को प्रदर्षित कर के पाठकों के सम्मुख एक प्रष्नचिह्न खड़ा करके, उसकी चेतना को व्यापक धरातल पर जागृत करके उसका समाधान ढूँढने के लिए बाध्य कर देता है। हम उनकी सामाजिक कहानियों का समाज शास्त्रीय दृष्टि से विस्तार से अध्ययन करेंगे।

समाज एक बड़ा शब्द है, जिसमें संसार के सभी जीवित प्राणी समाहित होते हैं, पर मुख्य रूप से यह सामाजिक जीवन पर आधारित है। समाज शास्त्र समाज का विज्ञान है जो विस्तृत रूप से आज के सामाजिक जीवन के लिए अध्ययन करता है। समाजषास्त्र समाज को वैज्ञानिक और ऐतिहासिक ढंग से अध्ययन करके अन्य विज्ञानों की भांति अपनी एक सैद्धान्तिक प्रणाली की स्थापना करता है। समाजषास्त्रीय अध्ययन के अन्तर्गत समाज का एक सम्पूर्ण चित्रण चित्रित किया जाता है। समाजषास्त्रीय अध्ययन सामाजिक जीवन का वैज्ञानिक वस्तुपरक तथा उससे सम्बन्धित तत्त्वों का अध्ययन करता है। साहित्य समाज का दर्पण है और समाज साहित्य के माध्यम से उसका स्वरूप, संस्कृति, रीति, धर्म, भाषा आदि समझता है। अतः साहित्य और समाज में गहरा सम्बन्ध है और सामाजिक बोध अध्ययन का विषय है।

साहित्य व समाज के परस्पर सम्बन्ध को लेकर समाज में घटित और इससे सम्बन्धित तत्त्वों की खोज करता है। वह सामाजिक, सांस्कृतिक घटनाओं, प्रारूपों तथा नाना प्रकार के बाह्य एवं अन्तः सम्बन्धों का अध्ययन करता है। इस प्रकार समाज के भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति साहित्य करता है। सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत सामाजिक जीवन के छोटे–छोटे हिस्से उत्पन्न होते हैं। डॉ. नगेन्द्र ने संक्षिप्त में अपनी परिभाषा दी है–"कर्ता, कृति और पाठक के त्रिकोण रूप साहित्य के सामाजिक परिवेष का विष्लेषण और संष्लेषण ही साहित्य का सामाजिक अध्ययन है।

हरबट स्पेन्सर ने "परिवार, धर्म, सामाजिक नियंत्रण तथा उद्योग अथवा कार्य को ही समाजषास्त्र की विषय–वस्तु नहीं बताया अपितु समितियों, समुदायों, श्रम–विभाजन, सामाजिक विभिन्नीकरण तथा सामाजिक स्तरीकरण, ज्ञान के समाजषास्त्र, विज्ञान के समाजषास्त्र और कला के समाजषास्त्रीय विष्लेषण को सामाजिक बोध की विषय–वस्तु में सम्मिलित किया है। इन्होंने भी समपूर्ण समाज को एक इकाई मानकर व्यापक पैमाने पर अध्ययन पर बल दिया है।" इस कथन में समाज को एक इकाई मानकर व्यापक रूप से सामाजिक बोध के अध्ययन करने पर बल दिया है।

सामाजिक बोध के अध्ययन का स्वरूप बड़ा व्यापक विषय है। समाज सामाजिक सम्बन्धों की जाल है। परिवार समाज का सबसे छोटा घटक है। परिवारों के संगठन से एक समुदाय, समुदायों के संगठन से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विष्व आदि। अन्तरराष्ट्रीय स्तर तक पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन समाजषास्त्री करता है। समाज में रहन–सहन भाषा, धर्म, नीति, अर्थनीति, राजनीति, गांव–नगर, कला, संस्कृति, विविध समुदाय, श्रेणी, वर्ग, समिति, परिवार, रिष्तेदार, समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, अंधविष्वास और पड़ोसियों के आपसी सम्बन्ध आदि का वैज्ञानिक अध्ययन करना ही सामाजिक बोध का अध्ययन स्वरूप है।

ममता कालिया न केवल शब्दों की कलाकारी जानती हैं बल्कि उनका भाषिक ज्ञान भी अत्यंत समृद्ध है। वे साधारण से साधारण शब्दों का प्रयोग करके भी उसके अलग–अलग भावार्थ प्रकट कर देती हैं। विषय अथवा प्रसंग के अनुरूप शब्दों की भावाभिव्यक्ति उनकी विशेषता है।अपने व्यंग्य की सटीकता और भाषा की सजीवता से उनके कथ्य में एक अलग ही प्रकार का भाव उत्पन्न हो जाता है।यही अभिव्यक्ति की सरलता एवं सुबोधता विषय वस्तु को मर्मस्पर्शी बना देती है। बीसवीं सदी के सातवें दशक के आसपास जब ममता कालिया ने अपना लेखन कार्य प्रारंभ किया तब तक अन्य कथाकारों और साहित्यकारों के रचनाकार्य में स्त्री की छवि कोमल, मासूम और घर की परिधि में बंधी हुई दिखाई देती है लगभग सभी प्रकार की पत्र–पत्रिकाओं ने नारी की यथास्थिति बनाए रखने का समर्थन करने वाले साहित्य का ही लेखन पठन हो रहा था। इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दमित, पीड़ित रही महिला के उत्थान के लिए, बहुआयामी व्यक्तित्व से परिपूर्ण ममता कालिया ने पुरजोर साहस के साथ अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम अपने रचनाओं को बनाया। अपने समकालीन यथार्थवादी साहित्यकारों में एक विशिष्ट पहचान बना चुकी ममता कालिया के रचना कार्य में उनकी मौलिक प्रतिभा का परिचय सहज ही मिल जाता है। ममता कालिया ने साहित्य की अनेक विधाओं में अपना लेखन कार्य किया उपन्यास कहानी एकांकी निबंध कविता आदि। इन सबमें उन्होंने समाज के लगभग सभी पहलुओं को न केवल छुआ बल्कि विषय

वस्तु की गहराई में उतर कर पाठक के जनमानस तक अपना भाव पहुंचाया। उनके साहित्य में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं और उनके समर्थ समाधान से लेकर दाम्पत्य जीवन में औरतों के संघर्ष को गहराई से चित्रित किया गया है। ममता कालिया ने अपने साहित्य में रोजमर्रा के संघर्ष में एक तरह से युद्धरत स्त्री के आंतरिक व्यक्तित्व को न केवल उभारा अपितु तुलनात्मक रूप से स्त्री को पुरुषवादी समाज से श्रेष्ठ सिद्ध करने का कार्य किया। विषय वस्तु की नवीनता, दृष्टिकोण बदलने का साहस और सामाजिक विसंगतियों पर कड़ा प्रहार ममता कालिया के साहित्य में हर बार पूर्ण रूप से मिलता है। हिंदी की श्रेष्ठ महिला रचनाकारों में से एक ममता कालिया के लेखन का तेवर उनकी योग्यता को प्रकट करता है,उनका मानना है कि अनेक स्तरों पर जीवन शैली में आधुनिकता को ग्रहण कर लेने वाला समाज स्त्री चिंतन की बदलती धारा और प्रवाह के प्रति उतना तैयार नहीं होता जितना समय की मांग है। अतः न केवल 21वीं सदी बल्कि आने वाले समय में भी ममता कालिया की रचनाएं प्रासंगिक रहेंगी। उनका साहित्य नारी के अंतस् की पीड़ा को जनमानस तक पहुंचाता रहेगा।

ममता कालिया का उपन्यास संसार –

ममता कालिया ने अपनी साहित्यिक यात्रा का आरंभ कविता से किया लेकिन उनकी पहली प्रकाशित पुस्तक 'छुटकारा' (सन् 1969) एक कहानी संग्रह थी। इन्होनें उपन्यासों एवं कहानियों में अपने समय के साँस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं पारिवारिक यथार्थ का सजीव चित्रण किया है। 'बेघर' उपन्यास में स्त्री अस्मिता के संदर्भ में संजीवनी के माध्यम से इन्होंने स्त्री अस्मिता की बात उस समय शुरू कर दी थी, जब स्त्री विमर्श नामक कोई भी आन्दोलन साहित्य पटल पर नहीं था। ममता जी ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में आम आदमी के रोजमर्रा के जीवन संघर्ष को अभिव्यक्त किया है।

ममता जी के सभी उपन्यासों का वर्णन इस प्रकार है–

बेघर (सन् 1971)

ममता जी का पहला उपन्यास सन् 1971 में प्रकाशित 'बेघर' था। इसमे ं ममता जी ने स्त्रियों के प्रति पुरुषों की संस्कारगत जड़ता, संदेह और उपयोगवादी दृष्टि को उभारा है। 'बेघर' में ममता जी ने प्रेमिका या पत्नी के 'कौमार्य के मिथक' की व्याप्त अव्यावहारिक रूढ़ि पर प्रश्न चिह्न लगाया है। 'बेघर' के पात्र 'परमजीत', 'संजीवनी' एवं 'रमा' अपने–अपने जीवन क्षेत्रों में अतृप्ति, नैराश्य, अन्तर्द्वन्द्व और अजनबीपन की विसंगतियों में खोए हुए हैं। उपन्यास नायक 'परमजीत' तो इन विसंगतियों से त्रस्त होकर मर जाता है। इक्कीसवीं सदी के पारिवारिक यथार्थ को उजागर करते इस उपन्यास में स्त्रियों के कौमार्य अर्थात स्त्री अस्मिता जैसे दृष्टिकोण को 'संजीवनी' के माध्यम से उभारकर पुरुषवादी समाज पर प्रश्न चिह्न खड़ा किया। संजीवनी का साथ पाते–पाते "संजीवनी के आगे वह कभी प्रतिबद्ध ढगं से विवाह का प्रस्ताव तो नहीं रखता पर दोनों को महसूस होता है कि वे एक–दूसरे के लिए बने है।"

उनका यह प्रेम विवाह के बन्धन में बंधने से पहले की ध्वस्त हो जाता है। दोनों के बीच की सारी दूरिया समाप्त होते ही परमजीत को लगा कि मै संजीवनी के जीवन में पहला व्यक्ति नहीं हूँ। परमजीत अच्छी परवरिश, सोसायटी व माहौल में रहने के बाद भी अपनी जिंदगी के सबसे अहम फैसले में भी पूर्वाग्रह से मुक्त नहीं हो पाता है और इसी फैसले की वजह से वह अपनी जिंदगी को घुटन भरी महसूस करता है। उपन्यास में संजीवनी के माध्यम से लेखिका कहना चाहती है कि एक शिक्षित, रोजगार सम्पन्न स्त्री जो अपने प्रेमी को सर्वस्व दे देती है फिर भी परमजीत पुरुष मानसिकता के दम्भ से बाहर नहीं निकल पाता है और संजीवनी जैसी लड़की के बारे में गलत फैसला लेता है।

सामाजिक यथार्थ का निर्वाह करने की खातिर वह रमा से विवाह भी करता है परन्तु वह अपने को हर स्तर पर उससे भिन्न पाता है। रमा एक रूढ़िग्रस्ता नायिका होने से वह परमजीत के आत्मनिर्वसन पर अंतिम मुहर लगा देती है। दो महानगरो ं का रेशा–रेशा उघाड़ता यह उपन्यास प्रेम और विवाह के बीच अन्तर और अन्तराल को प्रस्तुत करता है। इसकी समीक्षा में "बेघर (1971) में मध्यवर्गीय संस्कारों और मूल्यों की मार झेलती स्त्री की नियति का अंकन किया है। परम्परागत धार्मिक नैतिक संहिताओं के चलते मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन के नरक बन जाने के यथार्थ का अंकन इस उपन्यास में हुआ है।" रमा अपने संस्कारों की छाप परमजीत पर छोड़ना चाहती है न कि उसके माहौल से अपनी रूढ़िग्रस्त सोच को तोड़ने की। यही अन्तराल उनके जीवन में घुटन पैदा करता है जो उनके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी बन जाती है। ममता कालिया ने परमजीत के माध्यम से पुरुष मानसिकता के यथार्थ पर प्रश्न चिह्न लगाया है। संजीवनी का समर्पण, प्रेमभाव, सच्चाई व सब कुछ परमजीत की पुरुष मानसिकता का शिकार होता है। भारतीय समाज में असंख्यक औरतों पर भी इसी प्रकार की मानसिकता का प्रभाव पड़ता है।

भूमण्डलीकरण के कारण पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भारतीय समाज पर भी पड़ा। 'बेघर' उपन्यास में परमजीत व रमा के वैवाहिक जीवन के माध्यम से विवाह के स्वरूप दर्शाया है, जो भारतीय समाज की सबसे बड़ी परम्परा है कि शादी जैसे अहम फैसले भी परिवार और पुरुष मानसिकता के शिकार होते है। परमजीत के माध्यम से भारतीय सभ्यता के रूप में एक पत्नीव्रता पुरुष का चित्रण है तो पाश्चात्य सभ्यता और भूमण्डलीकरण को दर्शाता विजया और वालिया का प्रेम। दोनों शादी जैसे बन्धन में न बधंकर भी एक दूसरे के साथ रह रहे है और वे पाश्चात्य तरीके से अपनी दैनिक दिनचर्या सम्पन्न करते हुए मस्तमौला जीवन व्यतीत करते है। भारतीय परम्परा के एकदम विपरीत तरीके से उनका जीने का अन्दाज ही निराला है। वे एक नये सामाजिक यथार्थ को बुनते हैं। परमजीत की मृत्यु पर भी क्षणिक शोक के बाद उनकी सामाजिक यथार्थ को प्रकट करती दोनो ं परिवारो ं की सोच का बखान ममता जी ने बड़े ही कलात्मक ढंग से किया है। ममता जी ने 'बेघर' के पुनः प्रकाशन पर 'बेघर : आज' में लिखा है कि "बेघर' लिखते समय मेरे मन में था कि ऐसे नायक की रचना करूँ जो घर में रहकर भी बेघर महसूस करे। " ममता जी को अपने इस लक्ष्य में पूर्ण सफलता 'परमजीत' पात्र के माध्यम से मिलती है।

नरक दर नरक (सन् 1975)

ममता कालिया का दूसरा उपन्यास 'नरक दर नरक' था। यह उपन्यास गृहस्थ एवं मध्यमवर्गीय जीवन की विसंगतियों एवं विडम्बनाओं का बडा ही भयावह चित्रण करने वाला था। इसमें साधारण आदमी के जीवन में आने वाली कठिनाइयों यथा

नौकरी, प्रेम तथा शादी, आर्थिक विद्रूपताओं तथा इनके फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली कुण्ठा, संत्रास एवं निराशा की नारकीय जीवन परिस्थितियों का चित्रण है। इस उपन्यास के पात्र उषा एवं जगन अपने विवाह पश्चात् उभरी समस्याओं को सुलझा नहीं सकते और एक–दूसरे से अलग हो जाते हैं। इस उपन्यास में परिवेशगत अतिक्रमण से दाम्पत्य संबंधों में आ रहे विघटन अर्थात यथार्थ को उजागर किया गया है।

ममता जी ने अपने इस उपन्यास में सामाजिक यथार्थ का वह चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें प्रतिभा, ईमानदारी, मेहनत और प्रथम श्रेणी की डिग्रीयों के बावजूद रोजगार के लिए दर–दर ठोकरें खानी पड़ती है। लेखिका ने बम्बई के शैक्षिक वातावरण में व्याप्त शिक्षकों और अधिकारियों की गुटबन्दी, भ्रष्टाचार, अध्यापकों के प्रति अधिकारियो ं की साजिश, व्यवस्था के प्रति छात्रो ं में असंतोष तथा अध्यापकों की घुटनभरी जिन्दगी का चित्रण किया है तो दूसरी तरफ लेखिका ने नारी के अन्तर्जातीय प्रेम विवाह को प्रस्तुत किया है जो पाश्चात्य से प्रभावित लगता है। उपन्यास की नायिका उषा मध्वर्गीय परिवार से संबंधित है।

पढ़ने में हमेशा अव्वल रहने पर भी उसने अपने कैरियर की बजाय गृहस्थ जीवन को तरजीह दी। ममता जी ने इक्कीसवीं सदी के यथार्थ के पहलुओ ं बेरोजगारी, कॉलेज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्तर्जातीय विवाह से उत्पन्न समस्याओं को बखूबी उठाया है।

इस उपन्यास में एक ओर परिवार विनय और सीता का है जिसमें विनय शकी मिज़ाज व्यक्ति है। वह अपनी अध्यापिका पत्नी पर शक करता है। लेखिका ने महानगरीय यथार्थ को दर्शाते हुए मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओ ं को दिखलाया व उन्होंने बताया है कि समाज मे व्याप्त बेकारी और अर्थाभाव आदि मुद्दों को उठाकर महानगरों में रहने का प्रबंध करना कितना कठिन है। उपन्यास में नई गृहस्थी की यातनाओं का विस्तृत विवरण मिलता है। यह भी बताया है कि कैसे भावना प्रधान स्त्री भी प्रेम मुखी होती है। अच्छे–अच्छे आभूषणों, वस्त्रों का मूल्य भी प्रेम के सम्मुख अर्थहीन हो जाता है परन्तु पति अपने व्यवसाय में और पत्नी घर के काम–काज में व्यस्त होने से दोनों में दूरियाँ बढ़ती चली जाती है। पत्नी सदैव अतृप्त प्रेम का अनुभव करती है। सुखी दाम्पत्य के लिए पति–पत्नी के प्रेम की आवश्यकता पर बल दिया है। संसार में अकेला व्यक्ति किस प्रकार निरीह होता है, का चित्रण लेखिका ने बखूबी किया है।

प्रेम कहानी (सन् 1980)

ममता कालिया का तीसरा उपन्यास 'प्रेम कहानी' सन् 1980 में प्रकाशित हुआ जो वास्तव में एक लम्बी कहानी के समकक्ष है। इसमें ममता जी ने बदलते जीवन संदर्भों में मेडिकल, डॉक्टर एवं अस्पताल की पृष्ठभूमि पर प्रेम के स्वरूप का निर्धारण करते हुए जीवन में प्रेम की आवश्यकता को प्रतिपादित किया है। इस उपन्यास में लेखिका ने नारी जीवन को स्वच्छंद रूप से दर्शाया है एवं बताया कि नारी किसी भी पुरुष के हाथों की कठपुतली नहीं है। नारी अपने जीवन में हर प्रकार के दुःख सहकर भी पुरुष को सुखी रखती है।

आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास है। उपन्यास में लेखिका ने बेमेल विवाह की कथा का सजीव चित्रण किया गया है। जिसका ताना–बाना माता–पिता की इकलौती प्रतिभाशाली सन्तान जया के शिक्षाकाल, प्रेम के आकर्षण और माता–पिता के विरोध के बावजूद प्रेम विवाह करना तत्पश्चात् दाम्पत्य जीवन में तनाव के अनुभवों से बुना गया है। जया और यशा उपन्यास के दो समान्तर बिन्दु है। एक माता–पिता के विरोध के पश्चात् भी प्रेमी से विवाह कर लेती है तो दूसरी ओर परम्पराओ ं से विवश होकर प्रेमी से हाथ धो बैठती है। दोनों ने प्रेम किया परन्तु एक ने देश में रहने वाले से किया तो दूसरे ने विदेश में रहने वाले से। इस उपन्यास के नाम की सार्थकता भी इसी के कारण है। लेकिन दोनों को कुछ समय पश्चात् एक जैसा ही अनुभव होता है कि प्रेम और विवाह की वैयक्तिक और सामाजिक मान्यताओं में कोई अन्तर नहीं है। विशेषकर प्रेम और विवाह को लेकर आम लड़की जो सपने संजोती है उसके टूटने पर वह इस सामाजिक यथार्थ से सामना कर खुद ही टूट जाती है। जया और यशा दोनों ही प्रेम की किशोर कल्पनाओ से गुजरकर जब यथार्थ से साक्षात्कार करती है तो दोनों असन्तुष्ट हो जाती है। लेखिका ने डॉ. गुप्ता, गिनेस, चक्रधर आदि डॉक्टरों के माध्यम से अस्पतालों में चलने वाली राजनीति, लालची प्रवृत्ति, भ्रष्टाचार एवं अस्पताल के वातावरण को चित्रित किया है।

लड़कियाँ (सन् 1984)

ममता जी का चौथा उपन्यास 'लड़कियाँ' सन् 1984 में प्रकाशित हुआ। इसमें ममता कालिया ने मुंबई शहर में रहने वाली लड़कियों, उनके सपनों, महत्त्वाकांक्षाओ ं का चित्रण मनोवैज्ञानिक धरातल पर यथार्थ की जीवतं ता के साथ किया है।

ममता कालिया जी का यह एक लघु उपन्यास है। उपन्यास में लेखिका ने अविवाहित कामकाजी स्त्री का चित्रण किया है। महानगरीय यथार्थ को जीवंत करता यह उपन्यास बम्बई जैसे महानगर में अकेली रहने वाली नायिका है। उसके बॉस की कजिन है जो पाकिस्तान से आती है, आफशां। आफशां का साथ पाकर नायिका को अपना अविवाहित रहने का फैसला गलत महसूस होता है। बम्बई जैसे शहर में अकेले रहते नायिका थोड़ी सी कुंठित हो जाती है। जब उसे नायक आफशां की अलमारी से पिस्तौल मिलता है तो वह संत्रस्त हो जाती है और सोचती है कि शायद उसे मारने की साजिश बनाई जा रही है। उसकी गलतफहमी तब दूर होती है जब आफशां अपने देश लौटते समय उन हथियारों को फेंक देता है। उसने यह हथियार अपनी हिफाजत के लिए रखे हुए थे। परन्तु आफशां भी महसूस करता है कि मुसीबत के समय इंसान ही इंसान के काम आता है, न की हथियार ।

एक पत्नी के नोट्स (सन् 1997)

ममता कालिया का 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास सन् 1997 में प्रकाशित होकर पाठकों के पास पहुँचा। इसमें ममता जी ने दाम्पत्य सबं धो ं में होने वाले वैचारिक मतभेदो ं एव ं स्त्री अस्मिता को अस्तित्वगत सघं र्ष की बजाय व्यक्तिगत संघर्ष पर उभारा है। इसमें ममता जी ने एक प्रबुद्ध स्त्री की जीवन विसंगतियों एवं त्रासदी को अभिव्यक्ति दी है। यह उपन्या इनकी 'एक जीनियस की प्रेम कथा' कहानी पर आधारित है। इस कहानी की घटनाओ ं का थोड़ा विस्तृत रूप देकर ममता जी ने उपन्यास के रूप मे ं हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

उपन्यास का नायक संदीप प्रशासनिक अफसर है। वह मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की कविता से प्रेम विवाह करता है। संदीप का अपने पद और बुद्धि पर इतना अंहकार है कि वह अपने से उच्च पद पर किसी को देखना पसंद नहीं करता।

यहाँ तक कि अपनी पत्नी को भी नहीं। आधुनिक संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, भारतीय संस्कृति का लोप, पुरुषों का स्त्रियो ं पर प्रभाव डालने की प्रवृत्ति तथा सम्पूर्ण उपन्यास में घरेलू माहौल का चित्रण पूरी सफलता से किया है। यह उपन्यास पुरुष मानसिकता को विश्लेषित करने की कोशिश करता है। पति से ज्यादा बुद्धिमान स्त्री को पति बर्दाश्त नहीं कर सकता। वह पुरुष प्रधान संस्कृति का प्रतीक होने के कारण वह चाहता है कि उसकी पत्नी उसके कंधे से कंधा मिलाकर न चले बल्कि दो कदम उससे पीछे ही चले।

उपन्यास इक्कीसवीं सदी की नारी का चित्रण भी प्रस्तुत करता है जो इक्कीसवीं सदी के यथार्थ को प्रस्तुत करते हुए वह पति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहती है। इन्हीं विरोधी स्थितियों के कारण झगड़े होते है।

पत्नी जब एक अलग व्यक्तित्व बना रही है तो उसे नीचा दिखाने के लिए वह उसका किसी तरह से अपमान कर देना चाहता है। वास्तव में स्त्री किसी भी क्षेत्र में स्वयं चुनाव करे यह बात न किसी पिता व भाई के गले उतरता है और न ही पति के। यह यथार्थ है एक कटु सच्चाई का। ममता जी ने संदीप के माध्यम से आत्मकेन्द्रित, पाखण्डी एवं पीड़ापरक पति का अंकन किया है। जबकि कविता के माध्यम से एक प्रबुद्ध स्त्री की त्रासदी को व्यक्त किया है। इस उपन्यास में लेखिका ने पहली बार अस्तित्वगत संघर्ष की कथा न कह कर व्यक्तिगत संघर्ष की कथा कही है। लेखिका ने दर्शाया कि अस्तित्वगत संघर्ष से ज्यादा व्यक्तिगत संघर्ष कहीं अधिक लंबा और जानलेवा होता है।

दौड (सन् 2000)

सन् 2000 में ममता कालिया का बहुचर्चित लघु उपन्यास 'दौड़' आया जो इक्कीसवीं सदी के यथार्थ को दृष्टिगत करता हुआ बाजारवादी एवं उपभोक्तावादी संस्कृति द्वारा हो रहे व्यक्ति के जीवन में अनाधिकार अतिक्रमण एवं इसके फलस्वरूप उत्पन्न विद्रूपताओं का अंकन करता है। 'दौड़' उपन्यास में ममता जी ने आरक्षण, बेरोजगारी जैसी समस्याओ ं के साथ–साथ व्यक्तिवादी जीवन पद्धति की विसंगतियों को उजागर किया है जिनके फलस्वरूप नैतिकता, मर्यादा, संस्कारों तथा अन्य मानवीय मूल्यों का विघटन हो गया है। लेखिका ने इस उपन्यास में अति आधुनिकता की एक ऐसी दौड़ का वर्णन किया है जो न तो व्यक्ति को किसी दिशा में पहुंचाती है और न ही रूकने देती है बल्कि इस भौतिकतावादी दौड़ में परिवार, समाज, राष्ट्र के मानवीय मूल्यों का उत्तरोत्तर ह्रास हो रहा है। एक छोटे से परिवार के माध्यम से ममता कालिया ने बाजार की रफ्तार से से हमें अवगत कराया है, जहाँ संवेदना शून्य हो जाती है। इस उपन्यास का नायक पवन अपने माता–पिता को आज की भागम–भाग जिंदगी से रूबरू कराता है, उसकी माँ कहती है–''तू खरमास में शादी करेगा।

इसमें शादियाँ निषिद्ध होती है। पवन ने पास आकर माँ को कन्धे से पकड़ा, माँ, मेरी प्यारी माँ, यह मैं भी जानता हूँ और तुम भी कि हम लोग इन बातों में यकीन नहीं करते। सिलि के साथ जब बन्धन में बंध जाऊँ वही मेरे लिए मुबारक महीना है।''

संबंध, जीवन में अहं भूमिका न निभाकर हाशिए पर कर दिए जाते है। पवन जो रेखा और राकेश का बड़ा बेटा है। गैस की कम्पनी में मैनेजर है जो उत्तरोत्तर आर्थिक समृद्धि की लालसा से ग्रस्त है। उसके लिए नैतिकता भारी भरकम शब्द है। वह मानता है कि व्यवसाय में नैतिकता जैसा कोई शब्द नहीं होता यदि कम्पनी को लाभ हो रहा है तो वह रखेगी नहीं तो नहीं। इसलिए कम्पनी किसी व्यक्ति की महत्वाकांक्षा को पूरा करती है तो वह रहता है नहीं तो कम्पनी उसे निकाल फेंकती है। इसका उदाहरण चित्रेश जो जीजीसीएल कम्पनी में कार्यरत था, द्वारा दो जम्प वेतन वृद्धि की मांग करने पर कम्पनी द्वारा उसको ही जम्प आउट कर दिया गया।

इक्कीसवीं सदी नयी समस्याएँ लेकर आयी जैसे की आज अभिजात्य वर्ग के बच्चों को लगता है कि उसका भविष्य बड़े शहरों में है। इसलिए वे उसी ओर भागते है बिना इसकी परवाह किए की उनके पीछे परिवार का क्या होगा। उपन्यास पढ़ते हुए लगता है कि आज यह भी जरूरी है, क्योंकि जब सघन अपने पिता से कहता है कि ''हिन्दुस्तान अगर लौटा तो अपना काम करूँगा।'', ''पर पापा उसके लिए तो कम से कम तीस–चालीस लाख रूपए की जरूरत होगी।'' जिसे देने में पिता अपनी असमर्थता जता देते है।

इस उपन्यास 'दौड़' में एक और समस्या का जिक्र किया गया है– सामूहिक परिवार में बिखराव होकर एकल परिवार में विस्थापित हो रहे है। पति–पत्नी आपस में फोन तक से बातचीत करने का समय नहीं है। इक्कीसवीं सदी का युवा हमें किस भविष्य की ओर ले जा रहा है, एक सोचने की बात होगी ? आर्थिक रूप से सुदृढ़ एवं सबल होने के लिए प्रेरित तो करते है परन्तु आज के युवा वर्ग के चरित्र का निर्माण हम नहीं कर पा रहे है और न ही उनके मानवीय मूल्यों को उद्घाटित। शान्ति प्राप्त करने के उपाय भी यहाँ टॉनिक लेने के बराबर है जैसे ''चार–पाँच दिन का कोर्स होता है, वहाँ जाकर आप मेडिटेट कीजिए और छठे दिन वापस अपने काम से लग जाइए।'' एक मशीन की तरह।

भूमण्डलीकरण, उपभोक्तावाद और बाजारवाद व उनके साथ कम्प्यूटर क्रान्ति और पश्चिमी जीवन शैली ने भारतीय मध्यवर्ग को आक्रान्त कर दिया। अर्थ और काम के अतिरिक्त जैसे मानव जीवन का कोई उद्देश्य ही नहीं रह गया। भौतिक सुख सुविधाओ ं की इस अंधी दौड़ में कमोवेश सभी शामिल है। पारिवारिक–सामाजिक संबंधों, मूल्यों और मर्यादाओं में तेजी से परिवर्तन को ममता कालिया ने इस उपन्यास में दर्शाया है। नमिता सिंह 'दौड़' उपन्यास के बारे में लिखती है कि ''आज सर्वाधिक चर्चा के केन्द्र में वैश्वीकरण की प्रक्रिया और उसके प्रभावों को ग्रहण करता, नया बनता एक उपभोक्तावादी समाज है। इस नए समाज में मानवीय मूल्य और संवेदना के लिए स्थान नहीं है। यहाँ परस्पर संबंध जीवन मूल्य सभी बाजार पर आधारित है। लगातार आत्म केन्द्रित होता हुआ मनुष्य दिशाहीन भी हो रहा है। ममता कालिया के उपन्यास 'दौड़' ने इस पूरे विमर्श की सशक्त प्रस्तुति दी है। मेरी नजर में भूमण्डलीकरण और भारतीय समाज के इस बदलते स्वरूप जैसे विषय पर कोई ओर ऐसा उपन्यास नहीं लिखा गया है।'' इक्कीसवीं सदी का युवा वर्ग अपने खाने–पीने के पैसे काटकर हार्डवेयर का कोर्स सघन के माध्यम से कर एक नयी पहचान पैदा करता है। वास्तव में ममता कालिया ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से एक नयी पीढ़ी सामने लाकर खड़ी कर दी जो परिस्थितियों से जुझने और कुछ मौलिक कर गुजरने के लिए प्रतिबद्ध है। सघन मेहनत करके ताईवान की एक कम्पनी

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in January 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

में एप्लाई करता है जिसमें की उसके सारे दोस्तों ने एप्लाई किया था परन्तु एक पोस्ट के लिए सघन का चयन ही उसके लिए सीढ़ी बन गई। सघन द्वारा कड़ी मेहनत करने पर उस पोस्ट के लिए उसका चयन हो जाता है। वह ताईवान में रहकर अपनी नौकरी व जीवन दोनों व्यतीत करने में व्यस्त हो जाता है। उसे अपने माता–पिता की परवाह भी नहीं रही। महानगरीय परिवेश के बौद्धिक चरित्रों का यह आधुनिक उपन्यास स्त्री–पुरुष, पति–पत्नी सबंधो के बदलते हुए मूल्यों एवं समीकरणों के साथ–साथ
अपनी आस्थाओं के साथ जीने वाले स्त्री–पुरुष की कथा कहता है। समकालीन भोगवादी समाज विसंगतियों और विद्रूपताओं के दलदल मे कितनी तीव्रता से धंसता जा रहा है, इसका यथार्थ चित्रण है। बाजारवाद की बढ़ती सरहदों से आज मनुष्य किस प्रकार प्रभावित है इसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने इस उपन्यास में किया है। आज व्यक्ति किस तरह अपनी नैसर्गिक असुरक्षा और अकेलेपन के साथ जूझने के लिए बेबस है। अर्थ केन्द्रित व्यवस्था परिवार की जड़ों को नष्ट कर ही है। व्यक्ति बेहद अकेला महसूस कर रहा है। इस उपन्यास में आज की जिंदगी की वह दौड़ है जिसके साथ मनुष्य का संत्रास बढ़ता ही जा रहा है। तेजी से बदलती सामाजिक संरचना के भीतर आदमी और उसके संबंध टूटते दिखाई पड़े है।

अन्धेरे का ताला (सन् 2009)

लेखिका का अगला नया उपन्यास 'अन्धेरे का ताला' सन् 2009 में प्रकाशित हुआ है। उपन्यास में ममता जी ने अपने चिरपरिचित परिवेश–कॉलेज की अध्यापिकाओं, छात्राओं और कर्मचारियों के जीवन को चित्रित किया है। निराला की प्रसिद्ध कविता की पंक्तियाँ ''जल्द–जल्द पैर बढ़ाओ, आओ, आओ। आज अमीरों की हवेली, किसानों की होगी पाठशाला, धोबी, पासी, चमार, तेली, खोलेगें अँधेरे का ताला। एक पाठ पढ़ेगें, टाट बिछाओ।'' को सामने रखते हुए ममता जी ने 'अंधेरे का ताला' खोलने वालों की असलियत को सुपरिचित व्यंग्य एवं विनोद भरी शैली में उकेरा है। शिक्षा का क्षेत्र किस तरह उथल–पुथल का शिकार है। इसका एक दस्तावेजी चित्रण ममता कालिया ने अपने इस उपन्यास में किया है और अन्त में नन्दिता और उसकी प्राध्यापकों की हिम्मत पाठक को एक अदम्य साहस से भर जाती है। उपन्यास की खूबी है कि लेखिका ने कहीं भी उपदेश देने की कोशिश नहीं की, बल्कि इस अंधेरे के अक्स खींचते हुए उजाले के द्वीपों पर भी नजर डाली है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के शिक्षित लोगों द्वारा संघर्षरत और परिवर्तनशील समाज का सजीव चित्र इस उपन्यास में अपने बहुरंगी आयामों में दिखाई देता है। इसमें आरक्षण के पक्ष में भी सार्थक कथानक प्रस्तुत किया है।
उपन्यास में एक लड़का अपनी बहन का द्वितीय वर्ष में प्रवेश कराने हेतु बड़ी बहनजी से जा भिड़ा परन्तु बड़ी बहनजी ने यही कहा कि ''आप अपना समय खराब कर रहे हैं। इस वक्त मैं फीस का हिसाब कर रही हूँ। आप चले जायें।'' इस प्रकार कार्यालयों की लाल फिताशाही दिखाई गई। उपन्यास कॉलेज में होने वाली लगभग हर घटना की तरफ ध्यान आकर्षित करता है, चाहे वह प्रवेश कार्य हो या परीक्षा कार्य या छुट्टी हो। सभी में छात्राओं, प्राध्यापकों, प्राचार्य के साथ ही चपरासी तक के यथार्थ को प्रदर्शित किया गया है।

दुक्खम–सुक्खम (सन् 2010)

'दुक्खम–सुक्खम' यह ममता जी का अभी तक का अंतिम उपन्यास है, इस उपन्यास में तीन पीढ़ियों की सहभागिता है। मथुरा में रहने वाले एक परिवार की गाथा है। इसमें लाला नत्थीमल व पत्नी विद्यावती की सन्तान कविमोहन, लीला तथा भग्गो है और कविमोहन की पत्नी इन्दु है तो इनकी भी सन्तानें प्रतिभा एवं मनीषा है। इन तीन पीढ़ियों में पूरा ताना–बाना बुना है ममता जी ने। लीला, भग्गो, इन्दु, प्रतिभा, मनीषा और दादी के संघर्ष विलक्षण है। बड़ी बहन प्रतिभा के सामने औसत रूप रंग की मनीषा किस प्रकार अपने गुणों को विकसित कर आत्मशक्ति सम्पन्न बनती है यह पढ़ने योग्य है। प्रतिभा अपने घर से भागकर बम्बई चली जाती है और वहाँ मॉडलिंग करने लगती है। वह अपनी इस गलती से पछताकर एक विद्यालय में नृत्य की शिक्षा देने लगती है। अर्थात ममता जी के द्वारा रचे सभी पात्र आदर्श चरित्र का निर्माण करते है। कहीं भी कोई भी पात्र लीक से नहीं हटता है जिससे की कथा की रोचकता बनी रहती है।
'दुक्खम सुक्खम' जीवन के जटिल यथार्थ में गूँथा एक बहुअर्थी पद है। रेल का खेल खेलते बच्चों की लय में दादी जोड़ती हैं 'कटी जिन्दगानी कभी दुक्खम कभी सुक्खम।' यह एक खेल हो सकता है किन्तु इस खेल की त्रासदी, विडम्बना और विसगंति जो वही जान पाते हैं जो इसमें शामिल हैं।'' एक तरह से यह उपन्यास श्रृंखला की बाहरी–भीतरी कड़ियों से जकड़ी स्त्रियों के नवजागरण का गतिशील चित्र और उनकी मुक्ति का मानचित्र है। उपन्यास में बीसवीं शताब्दी की बदलती हुई मथुरा है। लेखिका ने स्वतंत्रता के संघर्ष, गाँधी के प्रभाव, चरखा–खादी–स्वदेशी से उभरे आत्मबल, देशविभाजन की त्रासदी और आज़ादी के बाद का परिदृश्य– इन सबको कथा की आन्तरिकता में शामिल किया है। जीवन की आपाधापी में अस्तित्व के बहुतेरे प्रश्नों की गूँज और उनके उत्तरों की आहट 'दुक्खम सुक्खम' में सुनाई पड़ती है।
उपन्यास में बीसवीं शताब्दी की बदलती हुई मथुरा है। लेखिका ने स्वतंत्रता के संघर्ष, गाँधी के प्रभाव, चर्खा–खादी, स्वदेशी से उभरे आत्मबल, देश–विभाजन की त्रासदी और आजादी के बाद का परिदृश्य शामिल किया गया है। कविमोहन के माध्यम से लेखिका ने नये जीवन मूल्यों की तलाश में व्यस्त ऐसे व्यक्ति की कहानी प्रस्तुत की है जिसका संसार डिग्री कॉलेज, साहित्य और रेड़ियो स्टेशन तक फैला है।
नन्द किशोर नवल ने 'दुक्खम सुक्खम' की समीक्षा करते हुए लिखा कि यह उपन्यास एक निम्न मध्यवर्गीय जीवन का बोलता हुआ चित्र है। साथ ही यह भी बताया कि यह उपन्यास स्त्री–विमर्श के साँचे में बिल्कुल नहीं ढाला है। इसे दो शहरी मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन की कथा–भर रहने दिया है। ये दोनों परिवार भी परस्पर संयुक्त हैं। पहला परिवार लाल नत्थीमल का है तो दूसरा उन्हीं के पुत्र कविमोहन का, जो पहले परिवार की ही शाखा है। ''कहने की आवश्यकता नहीं कि इस उपन्यास में ममता जी ने बच्चों की तरह कोई खिलवाड़ नहीं किया, बल्कि बड़ी सटीकता से हमारे सामने दो निम्न मध्यवर्गीय परिवारों को रख दिया है, जो दो काल–खंडों में विभाजित हैं, लेकिन हमारे समाज की उस निरन्तरता से हमें परिचित कराते हैं, जो सुख–दुख झेलते और संघर्ष एवं छोटी–मोटी उपलब्धियाँ करते जीवन जीते चले

ROOTINDEXING
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in January 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

जा रहे है। निरन्तरता के इस शान्त जल में एक पत्थर नायक कविमोहन की बड़ी पुत्री प्रतिभा फेंकती है, जो मॉडलिंग का धंधा करने के लिए माँ–बाप की इच्छा के विरूद्ध भागकर बम्बई चली जाती है।''

उपन्यास 'दुक्खम सुक्खम' की समीक्षा करते हुए दीपक शर्मा ने लिखा है कि ''यह उपन्यास हमारे हिन्दी के उपन्यास सम्राट–मुंशी प्रेमचन्द के 'कर्मभूमि' की याद ताजा करता है। इसमें पिता लाला नत्थीमल और पुत्र कविमोहन की परस्पर विरोधी विचारधाराओं का टकराव है किन्तु जहाँ 'कर्मभूमि' में उस टकराव का प्रतिपादन प्रेमचन्द की आदर्शवादिता के अन्तर्गत पिता के हृदय परिवर्तन में जा पहुँचता है। 'दुक्खम–सुक्खम' में पिता–पुत्र दोनों ही अपने –अपने जीवन का अनुगमन करते हैं। बल्कि वहाँ तो लोभ एवं स्वार्थ परायणता में त्याग ही मे ं सामाजिक उत्थान सम्भव दिखाया गया है जबकि यहाँ महत्त्वाकांक्षी कविमोहन अपनी सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने में ही अपनी तीनों बेटियों की भलाई देखता है। हम जैसे किसी भी मध्यवर्गीय शिक्षित माँ–बाप की भाँति ममता कालिया की यथार्थवादी दृष्टि रही है।''

इन उपन्यासों के अतिरिक्त 'तीन लघु उपन्यास' शीर्षक से 'एक पत्नी के नोट्स', 'प्रेम कहानी' एवं 'लड़कियाँ' उपन्यासों का संकलन प्रकाशित हुआ है। वर्तमान में अनउपलब्ध इन उपन्यासों के प्रकाशन से शोध विद्यार्थियों को सहयोग मिलेगा जिससे की इस क्षेत्र में विभिन्न विषयों पर शोध कार्य हो सकेगा।

सारांश –

प्रस्तुत षोध में समाज के विविध रूप से जुड़े कई महत्वपूर्ण मुद्दे दृष्टिगोचर होते हैं। ग्रामीण समाज की परंपरागत एकता बढ़ते हुए नगरीय समाज की समस्याएं और विविधता, उदार अर्थव्यवस्था, गरीबी, औद्योगिकीकरण के परिणाम आदि समाज के मुद्दों और समस्याओं से सामाजिक बोध के अध्ययन की उपयोगिता जुड़ी हुई है। हमारे देश की जाति–व्यवस्था, वर्ण एवं वर्गीय विभाजन व्यवस्था का सामाजिक बोध के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है। इससे यह भी निष्कर्ष निकला कि प्रत्येक जाति में आर्थिक वर्ग होते हैं और इससे आगे प्रत्येक जाति का अपना स्तरीकरण होता है। अछूत भी सजातीय नहीं होते। उनमें भी एक सोपान व्यवस्था है। सामाजिक बोध के अध्ययन की उपयोगिता आधुनिक युग में बढ़ती जा रही है। पूर्व के समाज में लोगों को आवश्यकताएं बहुत कम थीं और समाज का परिवर्तन भी बहुत धीमा था। उस समय संकुचित समाज था परंतु काल क्रमानुसार शनैः शनैः आज का समाज व्यापक एवं सरंचनात्मक रूप में जटिल रूप धारण कर चूका है। नित नई आवश्यकताएं बढ़ती जा रही हैं। सामाजिक बोध अध्ययन, समाज के अध्ययन का नवीनतम और सबसे उपयोगी विषय है। इसके माध्यम से सामाजिक संबंधों जैसे– भाषा, धर्म, नीति, राजनीति, अर्थनीति, कला, संस्कृति, रहन–सहन, वेश–भूषा आदि का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है। अन्य विज्ञानों की भांति सामाजिक बोध का भी उपयोग किया जाता है। इसकी व्यापक पृष्ठभूमि का गहन अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जिसका संबंध मानव समाज से है। अतः आधुनिक युग में सामाजिक बोध के अध्ययन की उपयोगिता दिन–प्रतिदिन बढ़ते जाना स्वाभाविक है, इसमें कहीं भी दो राय नहीं हो सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कालिया ममता, 'बेघर', दिल्ली– साक्षरा प्रकाषन, 2002
2. कालिया ममता, 'नरक दर नरक' नई दिल्ली– किताब घर प्रकाषन, 2008
3. कालिया ममता, 'कालिया की कहानियाँ', खण्ड–1, नई दिल्ली–वाणी प्रकाषन, 2004
4. कालिया ममता, 'कालिया की कहानियाँ', खण्ड–2, नई दिल्ली–वाणी प्रकाषन, 2006
5. कालिया ममता, 'उसका यौवन', इलाहाबाद–लोक भारती प्रकाषन, 2010
6. कालिया ममता, 'जाँच अभी जारी है', इलाहाबाद–लोक भारती प्रकाषन, 2010
7. कालिया ममता, 'छुटकारा', इलाहाबाद–लोक भारती प्रकाषन, 2010
8. कालिया ममता, 'खुषकिस्मत', इलाहाबाद–लोक भारती प्रकाषन, 2010
9. कालिया ममता, 'नई सदी की पहचान ', इलाहाबाद–लोक भारती प्रकाषन, 2002
10. कालिया ममता, 'मुखौटा', इलाहाबाद–लोक भारती प्रकाषन, 2003

ADVANCED SCIENCE INDEX